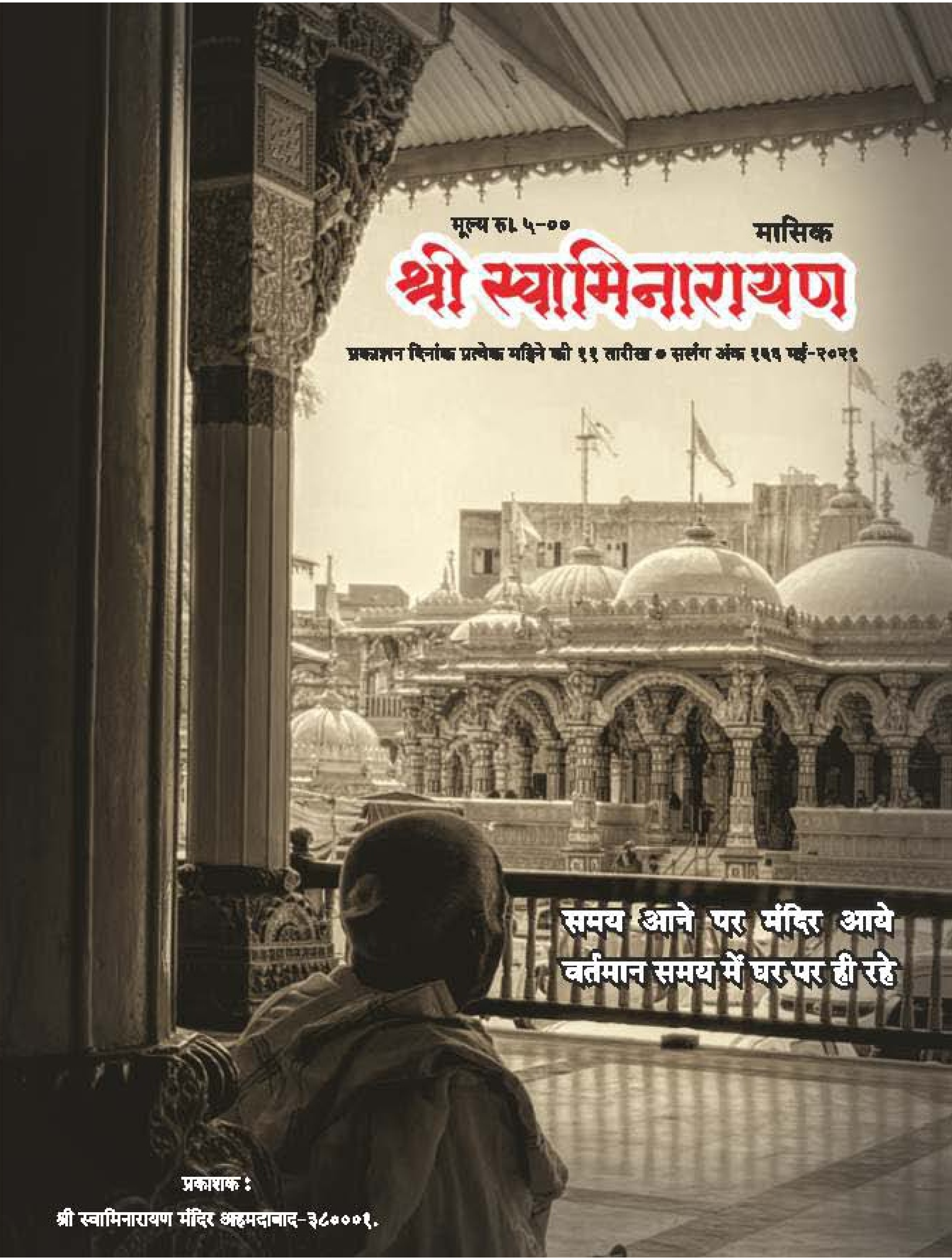

मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १६८ मई-२०२१

समय आने पर मंदिर आये
वर्तमान समय में घर पर ही रहे

प्रकाशक :
श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

प.पू. आचार्य महाराजश्री आर.एस.एस. के प्रांत प्रचारक (गुजरात राज्य) श्री चिंतन उपाध्याय के साथ गुजरात के कोरोना की वर्तमान परिस्थिति के विषय में चर्चा करते हुए ।

हम लोगो के लिये शिक्षापत्री के नियम जितना
ही महत्वपूर्ण है । कोरोना के नियम का पालन करना ।
इसलिये सरकारी नियमो का कड़ाई से पालन करे, घर पर रहे, स्वस्थ रहे..........

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ ● अंक : १६६ ● मई-२०२१

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	स्वच्छता की सफलता	०६
०४.	पर्व की पूर्व संध्या पर	०८
०५.	डांगरवा	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०७.	भक्ति सुधा	१६
०८.	सत्संग समाचार	१८

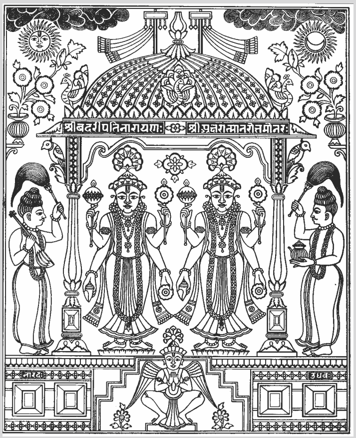

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

भगवान के स्वरुप में अपने चित्त की वृत्तियो को बनाये रखना बहुत कठिन होता है। लेकिन उस वृत्ति को अखंड भगवान के स्वरुप से कही अन्य न जाने देना तो अति कठिन कार्य है। स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवानने सर्व प्रथम ही वचनामृत में समझाये है। उसका अनुभव आज के महामारी के समय में सबको प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। अपने चारो तरफ परिचित व्यक्ति के घर में किसी को भी शारीरिक कष्ट आ जाने पर तुरंत यह भय पैदा हो जाता है कि कही तो छूवाछत का रोग तो नही हो गया है। इस विपरीत दशा में से बाहर निकलने के लिये अपने पास मात्र एक उपाय है। भगवान का भजन करना। उनकी दयालुता और कृपा दृष्टि के उपर दृढ विश्वास रखकर भगवान श्री नरनारायण का आने वाला २०० वाँ पर्व उत्सव की पत्रिका में लिये आयोजनो को पूर्ण करने के लिये। तन, मन, धन से लग जाने का समय आ गया है। उसमें से जिसे जिस कार्य से रुचि हो और अनुकूल हो सत्कार्य में लग जाये। जैसे मंत्र लेखन में रुचि है तो मंत्र लेखन की पुस्तिका आ गयी है। उसे प्राप्त करके उसमें समय व्यतीत करने का प्रबन्ध करके। भगवान को खुश करले। यह सब से निवेदन है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

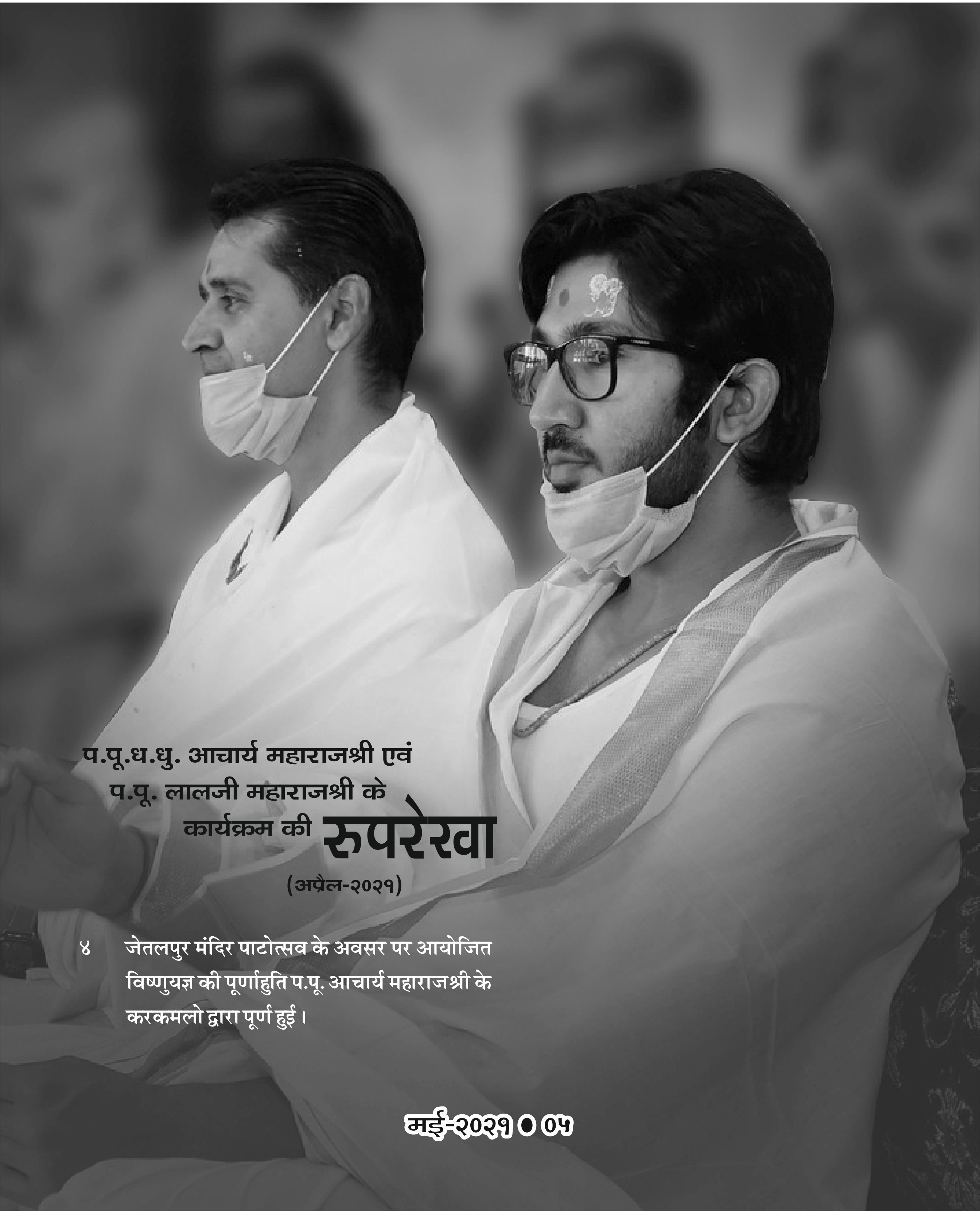

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रूपरेखा

(अप्रैल-२०२१)

४ जेतलपुर मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर आयोजित विष्णुयज्ञ की पूर्णाहुति प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण हुई ।

स्वच्छता की सफलता

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

धर्म और नियमानुसार आध्यात्मिक जीवन में अखंड सफलता के लिये शुद्धता और पवित्रता अति आवश्यक है । वह बाह्य और आन्तरिक दोनो होनी चाहिए । क्योकि ये दोनो एक दूसरो पर आधारित है । जैसे घर, मंदिर, आँगन, रास्त के साथ ही सदा सार्वजनिक जगह को अशुद्ध करने में मनुष्य मुख्य रुप से जिम्मेदार होता है । मनुष्य स्वयं शुद्ध-अशुद्ध बनता है । इससे उसके विचार पर प्रभाव पडता है । जो आज दुनियाँ को नजरो से दिखाई दे रहा हैं । परमात्माने मनुष्य को मन, तन और स्थान अति पवित्र दिये है । लेकिन वह अपने कर्मो से उसे अशुद्ध कर दिया है । उसका अच्छा और खराब परिणाम संसार भोग रहा है । मनुष्य की लापरवाही के कारण अनेक जीवो को सजा का सामना करना पड रहा है । अपनी तथा सार्वजनिक स्थलो को अशुद्ध अपवित्र करके परमात्मा का गुनहगार बन जाता है । उसे शुद्ध करने वाला व्यक्ति कृपा का पात्र बनता है । स्वच्छता बनाये रखना यह अपना नैतिक धर्म है ।

श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में अधिकांशतः अहिंसा-पवित्रता के उपर दवाब से आज्ञा किये है । उससे शरीर, मन, स्थान, धन, व्यवहार आचरण, मानसिक, विचार, वाणी, व्यवसाय तथा आध्यात्मिक विषम मुख्य रुप से है । हमारे धर्मशास्त्रो, पुराणो, उपपुराणो, स्मृतियाँ इस बात को बार-बार कहती है । उसमें से एक इतिहास नृसिंह पुराण को याद करें । जो कोई व्यक्ति भगवान के मंदिर को प्रतिदिन झाडू-पोछा के द्वारा स्वच्छ करता है । वह सभी पापो से मुक्त हो जाता है । तथा विष्णुलोक को प्राप्त करता है । विष्णुनारायण के स्वरुप में मुक्ति की लिपाई पुताई करता है । वह भी शुद्ध हृदय का होकर अनंत पुण्य प्राप्त करके परमात्मा को प्राप्त होता है । परमात्मा का देवालय मंदिर की भूमि अलौकिक होती है । उसे शुद्ध रखने वाला माया को पार करके परमात्मा को प्राप्त होती है । नृसिंह पुराण में सूतजी और मार्कण्डेय मुनि के संवाद में सुतपुराणी इस बारे में प्राचीन समय में चंद्रवशी में उत्पन्न हुए जयध्वज राजा की सत्य घटना आती है ।

एक दिन विती होत्र नाम के त्रिकाल दर्शी विद्वान ब्राह्मण जयध्यज राजा के पुरोहित बनकर राज्य में आये । राजा उनका आतिथ्य धर्म के अनुसार स्वागत-पूजन यथाशक्ति करके प्रार्थना पूर्वक दीन बचन बोले कि है ब्राह्मण । मेरे मोक्ष और कल्याण हेतु उपदेश में दो बचन कहे । तभी वित्रीहोत नामक ब्राह्मण बोले हे राजन आप भाग्यशाली वंश कुल को उज्जबल करने वाले हो । आपकी दैवीय बुद्धि पवित्र कार्य में सहयोगी बनेगी । आप का पूर्व जन्म वेदपाठी ब्राह्मण के घर मे हुआ था । आप पवित्र जीवन जीने वाले, धर्म, मर्यादा में रहकर वर्णाश्रम धर्म का पालन करके प्रतिदिन संध्या हवन तथा तर्पण जैसा पुण्यशाली कार्य करते थे । एक दिन किसी कार्य हेतु बाहर गाँव जाते समय रास्ते में किसी गाँव के किनारे जीर्ण देवालय था । उसमें रात्रि निवास करने के लिये प्रवेश किये । वहाँ पर खण्डहर की स्थिति में धुल से भरा था । देवालय में कचरा देखकर आप अपने उपवस्त्रो से साफ किये । यह करते-करते रात्रि का आधा प्रहर बीत

गया। आप वहाँ पर पवित्र भाव से सफाई किये थे। उस देवालय के देव की कृपा से आप दूसरे जन्म में चन्द्रवंश के पवित्र मनवाले जयध्वज नाम के राजा के रुप में आप को जन्म मिला। इस जन्म में भी आप राजाधिराज अनेक सेवको के स्वामी होते हुए भी। आप अपने राज्य के आराध्यदेव के मंदिर की प्रतिदिन साफ सफाई स्वयं करते है। वह आप का कल्याण तथा मोक्षदायी होगा। आप देहान्त के बाद विष्णुलोक में विष्णु भगवान के दरबार में मुक्ति के भागी बनेगे। जन्म-मरण से मुक्ति प्राप्त करके आप परमब्रह्म लोक में अविचल पद प्राप्त करेगे। भगवान के मंदिर की सफाई करने से आप की मन-बुद्दि अन्तःकरण देह और कारण शरीर में पैदा होने वाली वासना भस्म हो गई है। देवालय देव की स्थूल शरीर मानी जाती है। उसकी सेवा से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। इस लिये आप धर्मज्ञ भूपालक हरिभक्त पारायण नर श्रेष्ठ विष्णुभक्त पुरुषो में सर्व श्रेष्ठ हो। भगवान को अति प्रिय लगने वाला कार्य कर रहे है। इस कारण से आप की पूर्व की ७१ पीढीयो और पूर्वजो के तारनहार आप बने है। मंदिर, देवालय में छाडू लगो वाला, दीपक जलाने वाला, भोग नैवेद्य देने वाला, मंदिर बनवाने वाला, वस्त्र आभूषण देने वाला वह परमात्मा लोक में अविचल पद प्राप्त करता है। जिस प्रकार से मंदिर की सफाई की महिमा बताई गई है। उसी प्रकार अपने घर की, व्यवसाय की जगह सार्वजनिक स्थल, रास्ता बाग-बगीचा में कचरा करने से लक्ष्मी देवी नाराज हो जाती है। दिन दहाडे ही वहाँ पर गरीबी आ जाती है। यह सभी शास्त्रो में बताया गया है। जिस गली, मोहल्ले, खिडकी, सोसायटी, पोल-नगर अथवा महानगर कहा जाता है। यदि वहाँ पर गंदकी दिखाई देती है तो वहाँ पर पूर्व जन्म के दरिद्र आत्मा जन्म लेती है। वह अपना जीवन गंदगी में व्यतीत करते है। घर में स्वच्छता-पवित्रता होने से परिवार के सदस्यो के उपर अच्छा प्रभाव पडता है।

श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री के श्लोक ३२ में लिखे है कि लोगो को शास्त्र वर्णित मलमूत्र त्याग की जगह बताये है। जीर्ण देवालय नदी, तालाब, मार्ग, वोया गया खेत, पेड की छाया, बगीचा आदि जगहो पर थूकना और मल विर्सजन वर्जित बताया गया है।

अहमदाबाद में एक हरि भक्त दायलजीभाई निरमावाले थे। कालुपुर मंदिर में आते थे। सायकिल के उपर झाडु लेकर प्रातः ५ बजे आकर दो घंटे तक मंदिर की सफाई करते थे। और दूसरे को प्रेरणा देते थे। वहाँ से उनका व्यवहार और सत्संग दोनो अच्छा हो गया। घर बैठकर लाखो रुपया डिलरशीप में से कमाते थे। अन्ततः करोडपति बन गये। लेकिन सफाई की सेवा देते रहे। इस प्रसंग का ज्ञान अहमदाबाद के कई सत्संगि जानते है।

जेतलपुर धाम में प्रत्येक पूर्णिमा को देउसणा के कांतिभाई झाडू लेकर आते थे। पूरे दिन मंदिर की सफाई करते रहे थे। उनका भी व्यवहार और सत्संग अच्छा हो गया। इस तरह के प्रसंग सत्संग में गाँव-गाँव में दिखाई देता है।

शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज ने सर्व जीव हित के सिद्धान्त के विषय में प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के नेतृत्व में एक ''सीख'' नाम का वेब सीरियल का प्रसारण किया जा रहा है। ईस माध्यम से करोडो दर्शको ने श्रीहरि के सिद्धान्त का लाभ उठा रहे है।

पर्व की पूर्व संध्या पर

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

विश्व का सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान श्री नरनारायण भगवान के २०० वर्ष पूर्ण होने के नजदीक है। तब हम सब मिलकर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े. महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का नेतृत्व में श्री नरनारायण भगवान के २०० पाटोत्सव के शुभ संकल्प किया गया है। इस पर्व की यथार्थता को समझने का प्रयास करना चाहिए।

सम्प्रदाय का अति महत्व का उत्सव का अति संक्षिप्त, स्पष्ट और अर्थपूर्ण नाम ''पर्व'' में पू. गादीवालाश्रीने सूचित किया है। कितना अर्थपूर्ण यब शब्द है। जैसे भगवान अर्थात् बस भगवान उसी प्रकार श्री नरनारायण भगवान के समानांतर कोई हो नही सकता है। ''पर्व'' अर्थात् पर्व और दूसरा कुछ भी नही है। कारण कितना ही सूक्ष्म क्यो न हो वह बड़े कार्य की उत्पत्ति के लिये समर्थ होता है। बरगद की बीज अति छोटा होता है। लेकिन एक बड़े वट वृक्ष को पैदा करती है। उसी प्रकार 'पर्व' एक कारण है। और श्री नरनारायण भगवान के २०० वर्ष के कार्य की पूर्ति है।

कार्यक्रम की क्रमानुसार रुपरेखा तैयार हो रही है। पर्व के निमित्त जो आयोजन निर्धारित है। वह सब सूचना अपने श्री स्वामिनारायण मासिक अप्रैल-२०२१ के अंक में मुद्रित किया गया है।

काफी समय के पश्चात उत्सव, सत्संग के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। मार्च-२०२० से आज तक कोरोना की विषम महामारी विकराल बनकर पूरे विश्व को झकझोर रहा है। मास्क, सोसियल डीस्टेन्सींग तथा दूसरा कोविड - गाईड लाईन के अनुसार आदेश का पालन भी करना है। साथ ही साथ तन, मन, धन से पर्व में योगदान भी करना है।

इस पर्व की सार्थकता ही ऐसी है कि हमारा या पर्व भारतखंड के मनुष्य देव और आजीवन नैष्ठिक व्रतधारी ऐसे श्री नरनारायण भगवान का पर्व है। हम सभी बडे भाग्यशाली है कि हिमालय के निवासी अहमदाबाद शहर में आकर निवास किये है। वे अपार सुख के राशि है। नैष्ठिक व्रत उन्हे अति प्रिय है। उन्हे कोई पदार्थ नही चाहिए। क्योकि वे सभी पदार्थो को देने वाले है।

''.......और समैया आये तब उत्सव को श्री नरनारायण की ईच्छा से लाखो सामग्री से उत्सव हो और कई बार तुलसी का पत्ता रखकर भी उत्सव होता है। सहज मेही, किसी से आग्रह करके बात नही करना है। (ग.प्र.-२१)

वि.स. १८७८ में फाल्गुन सुद-३ सोमवार का दिन धन्य दिन है । श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का यह प्रथम मंदिर है । सम्प्रदाय की नींव यहाँ से तैयार की गई थी । अनेक प्रकार के विरोध के बावजूद सम्प्रदाय की विजयी प्रतीक अर्थात् अपना श्री नरनारायण भगवान का दिव्य मंदिर, २७ फरवरी-२०२२ से ४ मार्च-२०२२ तक पर्व मनाया जायेगा । अब उत्सव के लिये मात्र ९ महीने ही बाकी है।

श्री नरनारायण भरत खंड के राजाधिराज है । इस मुल्क के बादशाह है . इनका पर्व आन, बान, शान से मनाया जायेगा।

''ये तो मुल्क के बादशाह है, मै तो कंगाल हूँ'' यह समझ कर दास भाव से रहकर श्री नरनारायण भगवान के प्रति हमसे क्या नही हो सकता है ? कंगाल अर्थात् हम उनके सेवक है। दास है। वे स्वयं बादशाह है। इस भावना से भव्य पर्व का आयोजन करना है।

उत्सव के मध्य कोई मान न भी दे तो उसका भ्रम न रखे ''हमारे मालिक श्री नरनारायण भगवान का महोत्सव मनाया जा रहा है । ऐसा समझकर अन्दर की अमीरी दिखानी है।

''.......और समैया आये तब उत्सव को श्री नरनारायण की ईच्छा से लाखो सामग्री से उत्सव हो और कई बार तुलसी का पत्ता रखकर भी उत्सव होता है । सहज मेही, किसी से आग्रह करके बात नही करना है । (ग.प्र.-२१)

श्रीहरि के इस वचनामृत बोध को ध्यान में रखकर इस महोत्सव को मनाना है।

पर्व शब्द पावनकारी है । और पवित्र है । इसका कोई पयार्य हो ही नही सकता है।

श्री नरनारायण भगवान की महिमा तो स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में कई बार समझाये है । ये अपने पिता है । संसार में बड़े पद वाले पिता के पुत्र को कितना गर्व होता है ? हमारे पिता क्या है ? आप को पता है ! वह कभी-कभार धमकी देता रहता है । जब हम लोग तो नरनारायण भगवान के आश्रित है चाहे गरीब या अमीर रहे ? खराब गर्व रखना नही है । आज्ञाकारी बनकर पर्व को मनाये ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने विविध शास्त्रो (वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण) में से संकलित करके अपने हाथो द्वारा लिये श्री नरनारायणदेव नामक छोटी पुस्तक का हम सब प्रतिदिन पठन करेगे । तो श्री नरनारायण के प्रति निष्ठा अवश्य बढेगी।

खाते-पीते, चलते-धुमते शुभ क्रिया तथा अशुभ क्रिया के बारे में हमेशा भगवान में अखंड वृत्ति रखकर मन को स्वस्थ रखना चाहिए । तथा अभ्यास करे ।

ऐसा अभ्यास बनाये रखे । आगामी पर्व के उत्सव को यशस्वी बनाये । इसके लिये जो बन सके उसके लिये सदैव प्रयत्नशील बने रहे।

इस भावना से आने वाले पर्व का पावनकारी बना रहे।

श्री स्वामिनारायण मासिकमां छापवा माटे
લેખ, સમાચાર અને ફોટોગ્રાફ્સ ઈમેલથી મોકલવા માટે એડ્રેસ
magazine@swaminarayan.in
મોબાઈલથી પાડેલા ફોટા છપાશે નહિ

अहमदाबाद शहर के समीप
श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँवे

डांगरवा

संकलन : प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण भगवान अपने भक्तो का मनोरथ पूर्ण करने के लिये । और मुमुक्षुओ के कल्याण हेतु सम्पूर्ण गुजरात का भ्रमण किये थे । अहमदाबाद में मंदिर की प्रतिष्ठा के पश्चात आस-पास के छोटे-बड़े गाँवो में अन्तिम पायदान पर निवास करने वाले लोगो के उद्धार के लिये भ्रमण किये थे । उसमें से एक गाँव मेहसाणा जिला के कडी तालुका का डांगरवा गाँव है।

अहमदाबाद से मेहसाणा जाते समय रेवले स्टेशन कलोल से आगे डांगरवा स्टेशन आता है। यह गाँव आर्थिक और सामाजिक रुप से विकसित गाँव है।

यहाँ पर भाईयो और बहनो के ४ विशाल हरिमंदिर है । मंदिर उत्तर दरबार वाले है। मंदिर के दरवाजा के उपर भव्य टावर है । मंदिर के आगे सुंदर सजा चौक है । यहाँ पर श्रीहरि कईबार आये है । यहाँ पर श्रीहरि के चरण कमल से पवित्र जतनबा के प्रसादी का घर है। मकान मंदिर के पास ही है। गाँव के बाहर पूर्व दिशा में तालाब के किनारे जहाँ श्रीहरिने सभा की थी । वहाँ पर इस समय छलक बना हुआ है। उसके बगल में कुआ है। उस कुए में श्रीहरिने गंगाजी को साक्षात् प्रगट किया था । वह प्रसादी का कुआँ वहाँ पर स्थित है।

डांगरवा में श्रीहरि

स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्तचिंतामणी'' ग्रन्थ के प्रकरण ८३ में लिखे है।

त्यांथी आव्या डांगरवे दयाल,
सगे समूह मुनि मराल ॥३६॥
एम सत्संगमाहि फर्या,
कैक जीव ने निहाल कर्या ॥
जे जे वाटमे आवे ए गांव,
ते ते जन मां सारे छे काम ॥३७॥

श्रीहरि जब-जब डांगरवा आते थे । तब वेणीदास भाई नाम के भक्त श्रीहरि को अपने घर ले जाकर उत्साहपूर्वक उनकी सेवा करते थे । उसी तरह ज्ञानबाई, जतनबाई और वजीबाई आदि स्त्रियाँ भी श्रीहरि को दूध, दही, घी तथा अनेक प्रकार की मिठाई-भोजन से सेवा करते थे ।

अहमदाबाद से डांगरवा जाने के लिये
रेल्वे से कलोल स्टेशन से आगे
बाय रोड १ घंटे २० मिनट
अहमदाबाद एअरपोर्ट से १ घंटा ४ मिनट में

जनतबाई के घर पर भोजन परोसने की लीला करते हरि :

एकबार श्रीहरि को डांगरवा जाने के लिये तीव्र इच्छा हुई । तब श्रीहरि खोरज गाँव से निकलकर वडस्मा गाँव को पार करके डांगरवा रास्ते पर विशाल वटवृक्ष के नीचे विराजमान थे । तभी करजीसण के भक्त श्री गोविंदभाईजीने कहा आप हमारे गाँव करजीसण चले । वहाँ पर आप सभी को शक्कर का हलवा खिलायेगे । यह सुनकर जतनबाई श्रीहरि से बोली प्रभु हमारे घर पर तो शक्कर का हलवा तो नही है । लेकिन महाराज ! भोजन करने वाले सभी लोगो को दूध, दही, चावल, एवम् गुड एवम् जितना खा सके उतना खिलाउगी । यह कहकर हाथ जोडे जतनबा अपने घर चली गयी । जनतबा के जाने के बाद सभी संतो, ब्रह्मचारियो और घुडसवारी को बुलाकर श्रीहरिने कहा आप में प्रत्येक दो-दो सेर घी नही खा जाये तो आप को हमारी कसम है । इस प्रकार सभी को आज्ञा करके भगवान श्रीहरि डांगरवा आ गये । उस गाँव में श्रीहरि वेणीदासभाई के गर रुककर स्नान किये । मुकुन्द वर्णी ने भोजन किया । वहाँ से जनतबाई के घर पर गये । जतनबाई के पवित्र आँगन में श्रीहरि श्वेत वस्त्र धारण करके हरि कीर्तन करते मुनियो की पंक्ति के लिये घी से भरा पात्र लेकर घी परोसने लगे ।

परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान गुड और भात से पूर्ण सभी मुनियो तथा सभी पार्षदो के पात्र में अखंड धार से घी परोसने लगे । और दूसरे संत प्रत्येक के पात्र में सुंदर शाक, अचार, एवम् अन्य पकवान परोसने लगे । तब श्रीहरि सभी मुनियो से बोले कि आप लोग रास्तें खारी वड के नीचे जो आज्ञा किये थे । घी आदि पदार्थ खायेगे । तो आप की शरीर में तकलीफ नही आयेगी । इस प्रकार संत बार बार पार्षदो की पंगत में फिर से उनके पात्र में गुड और घी बारम्बार डालने लगे । श्रीहरि जनतबा से बोले हे

महाभाग्यशाली । जतनबा ! आप का कल्याण हो । बाद में भगवान श्रीहरि मुनियों को तृप्त हो गये समझ कर हाथ – पैर धोकर मंच उपर बैठ गये । इसी समय जतनबाई शक्कर, इलायची, केसर, बादाम तथा अन्य सुगंधीत पदार्थ से पूर्ण ४ सेर दूध का पात्र लेकर श्रीहरि के पास आकर बोली है, भक्त वत्सल प्रभु ! मेरा घी समाप्त होने का संकल्प आप किये । लेकिन घी तो कम नही हुआ । इस लिये श्रीहरि । यह दूध तो अवश्य पीये । श्रीहरि दूध पीना निषेध करते थे । लेकिन जतनबा के बारम्बार आग्रह से दूध प्रभु को जवरनंदी थी । जतनबा के भक्ति में बंधकर श्रीहरि सबको देखते दूध पी गये । ऐसी सुंदर लीला श्रीहरि का देखकर सभी नर–नारी आनन्दित हो रहे थे । और श्रीहरि की परोसने की आकाश में देव देखकर हर्षित हो रहे थे । वेणीदासभाई श्रीहरि की प्रार्थना करके कहने लगे । हे महाप्रभु ! आप के ज्ञान से हमे मोक्ष प्राप्त होगा । बिना ज्ञान के हमारे पुत्रो की मृत्यु होने पर उनका कल्याण या मोक्ष होगा कि नही ? उत्तर देते श्रीहरिने कहा कि हे वेणीदास । वैश्य जाति के बालको के बार में उसके कल्याण की चिंता मत करे । क्योंकि जिन वैश्यो के गर के उपर हमारी नजर पडी है । उस घर के उपर से गौरैया भी गुजरेगी । तो उसका भी कल्याण हो जाता है । आप लोगो के बच्चो को क्या कहना है । मेरी दया उन सब पर है ।इसमें आप की चिंता नही करनी चाहिए ।

इसके बाद किसी समय श्रीहरि लाघणज नाम के गाँव से डांगरवा में वेणीदास भक्त के घर आये । वे वेणीदासभाई के घर श्री मुकुंदवर्णीने सुंदर भोजन बनाया था । वे भोजन करके श्रीहरि दूसरे दिन किसी क्षत्राणी जतुबा नामकी भक्त की घर आये थे । जतुबाईने चंदन, पुष्प हार से श्रीहरि की पूजा की थी । इसके बाद जतनबा तथा उसके चार पुत्र अमरोजी इत्यादीने प्रेमपूर्वक श्रीहरि को एक सुंदर घोडी दिये थे । इसके बाद जतुबा परमकृपालु परमात्मा श्रीहरि की प्रार्थना करते हुए बोले, हे प्रभु ! आप हमारे जैसे गरीब के गर आये । मेरा घर पवित्र हो गया । यह अति उत्तम हुआ । हे श्रीहरि, हमारी मृत्यु के समय आप अपने धाम का सुख देना ।

इसके पश्चात् श्रीहरि यमुनाबाई नाम के घर पर गये थे । वहाँ पर रात्रि निवास किये थे । प्रातः श्रीहरि वहाँ से करजीसण नामक प्रसिद्ध गांव में गये थे । वहाँ से खोरज, नारदीपुर, लाघणज, इत्यादि गाँवो का भ्रमण करते पुनः डांगरवा गाँव में आये थे । वेणीदासभाईने श्रीहरि तथा संतो को स्नान कराके वाडी में सुंदर भोजन कराये थे । भोजन करने के पश्चात श्रीहरि एवम् संत पार्षद वेणीदास के घर आये थे । वेणीभाई के घर सबा में विराजमान श्रीहरि अर्धरात्रि को भक्त बाइयो से बोले कि जनतबा तथा अन्य महिलाये । आप को यहि हमारी पूजा करना है तो अभी पूजा कर लीजिये । यह सुनकर सभी भाविक स्त्रीयाँ प्रेमपूर्वक श्रीहरि की पूजा करने लगी । पूजा में चंदन का अभाव होने के कारण केवल कुमकुम से पूजा की थी । प्रातः काल श्रीहरि उठकर जनतबा से कहे । हे भक्त बाई जतनबा आप

की दुआ और आप सभी स्त्रियाँ रात्रि में पूजा के समय हमारे शरीर के उपर कंकु का लेप की थी । सुख जाने के बाद देह रात्रि में हमारी त्वचा खिचने लगी थी । इस प्रकार की बात करते श्रीहरि की पूरी शरीर मुकुन्दवर्णी ने भीगे वस्त्र से पोछ डाले थे ।

एकबार गढपुर से निकलकर भगवान श्रीहरि डाँगरवा गाँव में आये थे । और एकान्तवास में चले गये थए । और पार्षद भगुजीने जतनबा के पास जाकर भोजन कराने का आदेश दिये थे । जतनबा सभी प्रकार के पकवान को लेकर श्रीहरि के सामने जा रही थी । जतनबा के पीछे-पीछे और दूसरी महिलाये जा रही थी । इसके बाद जतनबा के द्वारा लाये गये सिद्धा से शिवराम विप्र ने भोजन बनाया । सभी लोग भोजन किये । श्रीहरि से सोनाबाई बोली हे प्रभु ! आप यहाँ पर गुप्त रुप से रहे । हम लोग आप की रक्षा करेगे । तब सुख सिन्धु श्रीहरिने सोनाबाई से बोले हे सोनाबाई ! आप लोग अपने घर जाईये । मैं बाद में आप के गाँव में आउगा । यह कर श्रीहरि

भोजन करके तृप्त हो गये । इस प्रकार श्रीहरि अपने चरणांकित द्वारा डांगरवा गाँव को पवित्र किये थे । इसके बाद स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने भी ''भक्तचिंतामणी'' नामक ग्रंथ में डांगरवा के भक्तो का नाम प्रकरण ११९ में निचे बताये है ।

कणवी भगत वेणीदास कली,
भाव संग नरोत्तम मली ॥७३॥
जतन रळियात वज्जिन,
कर्यु कणबी कुल पावन ॥
क्षत्रि भगत प्रताप की नाम,
उमेदजी अग्रोजी अकाम ॥७४॥
थानोजी बनोजी हरिजन,
दलजी अमरोजी पावन ॥
शेठ साकलचंद मूलचंद,
हरिजीवन अवलनंद ॥७५॥
ये आदि भक्त बाई-भाई,
वसे गाम डांगरवाई ॥

इस प्रकार स.गु. निष्कुलानंद स्वामी भी डांगरवा के भक्तजनो का नाम ''भक्तचिंतामणी'' ग्रन्थ में लिखे है।

भक्त वेणीदास का संकल्प :

एक समय श्रीहरि डांगरवा गाँव में वेणीदास भक्त के घर पर निवास कर रहे थे । उस समय वेणीदास भक्त को उनके मन में संकल्प आया कि खेत में बीज बोने भर का ही धान्य है । इस कारण से श्रीहरि दूसरी जगह पर जाये तो अच्छा रहेगा । वेणीदास के संकल्प को श्रीहरि अन्तःकरण में रखकर वेणीदास से श्रीहरि बोले ! हे भक्तवेणीदास । आप को अपने हृदय में ऐसा संकल्प नही लेना चाहिए । में कैसा हूँ सुनो । जिस भी आदमी का मैं पुष्प, पत्र, फल, अन्न जल तथा दूध खाता हूँ । उसके घर पर अनाज कम नहीं होता है । बल्कि उस आदमी के घर का धन-धान्य वृद्धि करने लगता है । ऐसा मैं हूँ । इस लिये ऐसा आप संकल्प नही करे । कारण है भक्त वेणीदास ! मैं कल्पवृक्ष समान हूँ । आप खराब संकल्प करेगे तो आप के घर में उसी तरह का हो जायेगा । और आप के घर में हमारी कृपा से धन-धान्य प्रतिदिन बढता जायेगा ।

जतनबा की आत्मनिष्ठा :

एक बार गढडा गाँव की उत्तर दिशा में जीवा खाचर की वाडी में श्रीजी महाराज आये थे । वहाँ पर श्रीहरि

विराजमान थे । वहाँ पर जनतबा आकरके दोनो हाथ जोडकर सामने खडी थी । यह देखकर श्रीजी पूछे कि आप कौन ? तब जतनबाने उत्तर दिया, हे महाराज ! मैं आत्मा हूँ। महाराज बोले आप शरीर नही है ? फिर जतनबा बोली, मैं शरीर नही, तब श्रीहरि बोले देह को कोई काटे या जला दे तो कैसा होगा ? तब जतनबाई बोली, भले जलाये । यह सुनकर उनकी दृढता देखकर महाराज उनके उपर हाथ रखकर देव को रख दिये । वह बाई महाराज के सामने देख रही थी । महाराजने पूछा कैसी है ? बाईने उत्तर दिया । भले जले हमे शरीर का साथ कहाँ रखना है । ऐसी शूरवीरता और निष्ठा देखकर सिरसे देव उतार दिये । संवत १८६८ के अकाल में जतनबा ने श्रीहरि तथा संतो को अपने घर पर रखकर खूब सेवा की थी । ऐसा श्रीहरि के प्रति जतनबा का प्रेमभाव था ।

एकबार श्रीजी महाराज डांगरवा आये थे । जनतबा ने भोजन देकर जनतबा बाहर हाथ धोने आई थी । उसी समय जतनबा के पिता बोले महाराज जाते हो तो जाने देना । अब बुवाई करने भर का अनाज बचा है । भोजन करके महाराज, बाहर आये । वहाँ पर करजीसण के गोविंद पटेल वहाँ पर थे । उनसे महाराजने पूछा ये पटेल क्या कह रहे थे । पटेल बोले, महाराज ! जतन से मैं कहा रहा था कि महाराज जाये तो उन्हे जाने देना । क्यो बोने भर का अनाज बचा है । महाराज बोले आइये देखते है कि आप के कोटार में कितना अन्न है । इसके बाद महाराज तथा जतनबाई के पिता तथा जतनबाई तीनो लोग गये । उसमें सात कोठी (देहरी) खाली पडी थी । उन कोटी पर महाराज डंडे को पीटकर बताते लो यह तो भरी है। ऐसी महिमा पूर्ण चमत्कार वहाँ पर श्रीहरिने दिखाया था ।

डांगरवा में श्रीजी महाराजने गंगा को प्रगट किया था :

एक बार श्रीजी महाराज डांगरवा गाँव में गये थे । वहाँ के हरिभक्त राजपुत डाभी भाई के घर पर गये थे । उस समय उस गाँव में एक अच्छी हरिभक्त बाई थी । वह महाराज से बोली जो गंगा स्नान करता है उसका कल्याण हो जाता है। तभी महाराजजीने कहाँ कि आपके गाँव के किनारे जो कुँवा है । उसमें गंगाजी आने वाली है । उसके लिये ढोल-शहनाई बजाने वाले को बुलाये । तथा महाराज, संत, पार्षद तथा हरिबक्त गाजे बाजे के साथ कूँए पर गये । महाराजने उस कुए से एक पानी का घडा भर कर अपने दाहिने पैर के अंगूठे से कूँवा के किनारे रखकर घडा में से पानी की धारा प्रसादी के रुप में कूए में डाले थे । ''हमारा अवतार वामनजी एक अँगूठे से गंगा आई थी । तो हम सर्व अवतारो के अवतारी है । इस लिये ये आप के लिये बड़ी गंगा हो गयी । इस कारण आज से इस कुए का नाम गंगा जल वाला कुँआ रहेगा । कूँआ को प्रसादी वाला करके पुनः गाजे-बाजे के साथ सभी लोग वापस गाँव में आये ।

इस कारण से श्रीहरि डांगरवा गाँव में अपना प्रताप बताकर कई लोगो का उद्धार किये थे । स.गु. कृष्णानंद स्वामीने भी ''श्रीहरिचरित्रामृत'' नामक ग्रंथ में अ.३५ में डांगरवा गाँव की पवित्र भूमि का निम्न लिखित वर्णन किये है।

आव्या डांगरवे दीनबंधु, करुणानिधि सुख सिंधु ॥
डोशी जतनबाईने घेर, गया पुरुषोत्तम करि मेर ॥४४॥
दहीं, दूधनी रेल मचावी, संत खूब जमाड्य तेडावी ॥
डाभी अमरो अगरोजी नाम, एह आदि बीजा सुखधाम ॥४५॥
सुख आव्युं रहि धणा दन, पछे चालिया पोते जीवन ॥
विसनगर गया सुखकंद, जमीदासने आपी आनंद ॥४६॥

इस प्रकार डांगरवा गाँव में श्रीहरि अथ्यन्त प्रभावशाली कृत्य किये । इस गाँव की महिमा का स्थान देकर भक्तजनो को सुख देकर अक्षरधाम के अधिकारी बनाये है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

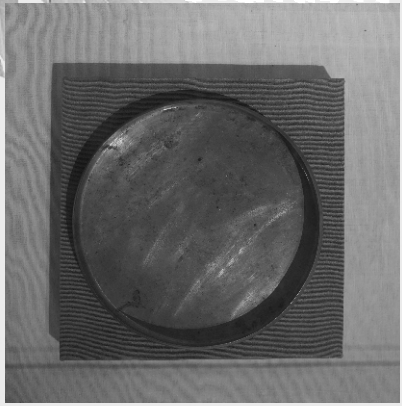

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

पुनः एक बार हम सभी कोरोना के विषमय काल से प्रभावित है । अपना मंदिर और म्यूजियम भी दर्शन के लिये बंद कर दिया गया है । सोशियल मीडिया में हम सभी को विचलित कर देने वाला पोस्ट अधिकांशतः आता रहता है । यहाँ तक यदि कोई किसी के जन्म दिन का फोटो रख देता है तो लोग उसे देखे बिना कमेन्ट बाक्स में ''ओम शांति'' और 'रिप' लिख देते है । लेकिन जिसका श्री नरनारायणदेव और सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान में दृढ निश्चय है । वे सभी इन वस्तुओ से अलिप्त होकर खराब समय में विचलित नही होते है ।

ऐसा दृढ निश्चय डांगरवा की जतनबा को श्रीहरि के प्रति था । विक्रम संवत १८६९ में अकाल के समय में श्रीहरि डांगरवा में जतनबा के घर एकांत में निवास करके ब्राह्मण के द्वारा भगवान सम्बन्धी कथा करवा रहे थे । और सोमला खाचर तथा मुकुंदवर्णी की उपस्थिति में जतनबा को ब्रह्म स्वरुप का ज्ञान दिये थे । शरीर त्यागने के पश्चात् ऐसी उत्तम स्त्री भक्त राधिका तुल्य कहे थे । तथा जतनबा की प्रशंसा किये थे । तभी जतनबा का कल्याण करने वाले महाप्रभु आप सभी जीवो का पोषण करने वाले है । कृपा करके जल वृष्टि कराके सभी जीवो प्राणियो के लिये कृपा करें । और उसी रात को अच्छी वर्षा हुई । सभी जीव सुखी हो गये । जतनबा के घर श्रीहरि ने दूध, दहीं और घी परोसने की लीला किये थे । यह सत्संग में अधिक प्रचलित है । डांगरवा में जनतबा के घर खाने तथा परोसने में जिन बर्तनो का उपयोग किया गया था । वे बर्तन अपने म्यूजियम के होल नं. ९ में दर्शन हेतु रखे गये है ।

– प्रफुल खरसाणी

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "मन को ध्येय के प्रति लगा सकते है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

''सबसे कठिन कार्य क्या है ? महाराजने वचनामृत में कहे है कि भगवान के मूर्ति के प्रति अखंड ध्यान रखना यदि यह वस्तु मिल जाये तो कोई प्रयास की आवस्यकता ही नही हैं । जो भक्त इस अवस्था को प्राप्त करले तो उसे जीव क्या है ? माया क्या है ? ईश्वर क्या है ? उसे सब कुछ स्वयं समझ में आ जाता है । अर्थात् सच्चा ज्ञान सरलता से मिल जाता है । हम भगवान के ध्यान में बैठते है तो सबसे बडी रुकावट क्या है ? यह अपना मन होता है । क्योकि ? मन में तत्काल विचारों का प्रवाह चलने लगता है । तो यह क्या है ? यह माया है । माया के विषय में शास्त्रो में सर्वाधिक लिखा गया है । लेकिन अपने आराध्य देव माया की संक्षिप्त परिभाषा को परिभाषित कर दिये है । हम लोगो को विस्तार से समझने की आवश्यकता ही नही है । हमे भगवान के अलावा कोई भी विचार आये तो वह माया ही है । उदाहरण स्वरुप टी.वी. देखने की ईच्छा होती है . बाद में मंदिर जाने की ईच्छा होती है । इस अवस्था में आज नही कल जायेगे । ऐसा विचार जन्म लेता है । ध्यान करने पर नींद आने लगती है । तो मन स्थिर कैसे होगा । तो मन 'ज्ञेय' है । और हम ज्ञाता है । अर्थात 'ज्ञेय' देखने की वस्तु (विचार) और 'ज्ञाता' जानने वाले हम स्वयं ''आत्मा'' तो हमें ध्येय निश्चित कर लेना है कि जो भी कार्य करे भगवान को मन में रखकर करे । महाराजने वचनामृत में कहा है कि धुमते-चलते प्रत्येक कार्य में यदि भगवान याद आयेगे, तो मन की वृत्ति भगवान में रहेगी । ध्यान करते समय वृत्ति महाराज में रहेगी । इसलिये जागृत अवस्था, स्वपनावस्था और शयनावस्था तीनो में भगवान के प्रति वृत्ति बनी रहे । वह कठिन है । लेकिन असम्भव नही है । लेकिन ध्येय निश्चित करना पडता है । फिर ध्येय के प्रमाण में चलना पड़ता है । हमें पढाई के समय पास होना हो तो जब तक याद नही हो जाता है । तब-तक पढते रहते है । ९०% परिणाम अवश्य ही नही लाये लेकिन परीक्षा में उत्तीर्ण होना ही पडता है । उत्तीर्ण होने तक के लिये पढना पडता है । एकडर बना रहता है कि ? उत्तीर्ण होने का लक्ष्य बना के रखे थे । उसी प्रकार महाराज के लिये लक्ष्य बनाकर अखंड स्मरण करते रहना चाहिए । ऐसा निर्णय करने से आप महाराज के प्रति ओतप्रोत रहेगे । उसके लिये पक्का निर्णय लेना पडेगा । मन में माया सम्बन्धी जो विचार आते है । उसमें ओत-प्रोत न हो । हम दृढ रहेगे तो मन हम पर प्रभावी नही होगा । मन को ध्येय के प्रति मोड सकते है । क्योंकि ? मन 'जड' है । और हम 'चेतन' है । चेतन अर्थात् 'आत्मा' और आत्मा की शक्ति अनन्त है । तो क्या करना है ? तो मन के साथ बात करना है । मित्र के समान समझाकर काम लेना है । फिर भी विचार अधिक आये । उसमें से जो अपने हित का नही है । उसे छोड देना

चाहिए । विचारो को अवलोकन करते रहना चाहिए । अलग रहने से उसे आधार नही मिलता है । इस विचार मिट जाता है । द्रढ सत्संगि बन जाने पर यह कार्य कठिन नही रहजाता है । मोक्ष प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ करते रहना चाहिए । मन तो अभिप्रायो का संग्रह स्थल है । कई जन्मो की मनोग्रन्थि सुषुप्त अवस्था में शरीर में स्थित रहती है । वह बाहर जब द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का संयोग होने से तब मन की गाँठ फूटती है । उसे विचार स्वरुप में देख सकते है । उसका भाग न बनकर अलग रहा जा सकता है । नापसंद विचारो में रुकावट नही आती है । पसंद विचार के एकाकार हो जाते है । वहाँ पर जागृत रहना है । क्योकि ? वे विचार हमारे उपर प्रभावी हो जाते है । वहाँ पर मन का नही मानना चाहिए । ध्येय के विरोध में नही जाना चाहिए । एक बार निश्चित कर लेने के बाद झोल नही मारना चाहिए । मन निग्रंथ होने पर ही विचार बंद होते है । लेकिन मन निग्रंथ हो । यह अवस्था बहुत आगे की है । इस लिये हमें यह, पुरुषार्थ करना पडेगा कि हमें मन अनुसार नही बल्कि ध्येय के अनुसार जीवन जीना पडेगा । और शास्त्र समाधि में क्या कहता है । समाधि अर्थात् क्या ? समाधि अर्थात् भक्त की जब इच्छा हो तब विना किसी अवरोध के अपने मर्जीनुसार भक्त भगवान के धाम का दर्शन कर सके । कुशळ कुँवरबा ने क्या किया था । भगवान जब जाने की अनुमति माँगे । उस समय भगवान को बैठाकर ऐसा दर्शन की कि उनके चित्त से मे से वह रुप निकला ही नही । चित्त वृत्ति में महाराज की मूर्ति वैठाली । समाधि की अवस्था में आ गई । हम लोग तो २ घंटे प्रवचन में भी ध्यान से बैठ नही पाते है । हमें कथा का महत्व समझ में नही आता है । इस लिये महाराज की महिमा भी समझ में नहि आती है । इस लिये महाराज के प्रति भी इतना प्रेम नही दिखाई देता है । जैसे कोई अपनी सखी होती है । जिसमें आप का आत्मीय लगाव होता है । हम उसके विषय में पूर्ण ज्ञान रखते है । और हमें प्रिय लगती है । उसे क्या अच्छा लगेगा । वैसे प्रतिदिन कितना चेहरा देखते है । लेकिन उसका चेहरा भूलता नही है । क्योकि ? याद शक्ति रागद्वेष पर आधारित है । हमें वहाँ पर अधिक प्रेम है । इस कारण वह सरलता से याद रहती है । इसी प्रकार भगवान में भी अधिक राग रखे । शुद्ध प्रेम करे । दर्शन करते समय निष्काम भाव से दर्शन करे यह कार्य धीरे-धीरे से होता है । अशक्य नही है । इसके लिये प्यास करना चाहिए । हम दिन में कितनी बाते सुनते है उसमें से कितना याद रहता है । जो हम याद रखना चाहते है उसे ही याद रखते है । जब आप दर्शन करे । तब आप का मन, बुद्धि, चित्त सब कुछ भगवान से जुडा रखे । पूरी मूर्ति हृदय में उतार ले । हमारी बुद्धि भर गयी है । जगह नहीं है ऐसा होता है क्या ? लेकिन मोबाइल - संगणक में ऐसा ही होता है । हमारी बुद्धि असीमित है । जितना प्रयोग करेगे उतनी बुद्धि मिलती है । ज्ञान बढता जाता है । भगवान ने हमे अधिक मेमरी प्रदान किये है । वह कभी पूर्ण होने वाली नही है ।

हम अनाज साफ करके कचरा बाहर फैक देते है । उपयोगी पदार्थ को रख लेते है । सुनने योग्य सुनिये । बाकी का त्याग कर दे । इस लिये खराब नही सुने । जो हानि करने वाली बात हो । उसे भूल जाये । दिमाग को स्वच्छ रखे । अनावश्यक वस्तु स्वयं निकल जायेगी । न सुनने न देखने वाली वस्तु पर ध्यान नहीं देना चाहिए । वह स्वयं दूर हो जायेगी । सब कुछ किया जा सकता है । आप सब को महाराज पूर्ण शक्ति दे । ऐसी महाराज के चरणो में वंदना करता हूँ ।

सत्संग समाचार

कालुपुर मंदिर में श्री रामनमवी श्रीहरि प्रागट्योत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के सुंदर मार्गदर्शन प्रेरणा से वर्तमान कोरोना महामारी को लक्ष्य में लेकर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चैत्र सुद-९ को सर्वोपरि अवतारो के अवतारी आराध्य देव श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव अत्यंत सादगी पूर्वक मनाया गया।

प्रातः ६-३० बजे अक्षरभवन में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव के अवसर पर षोडशोपचार महाभिषेक विधिवत किया गया। अन्नकूट का सुंदर प्रबन्ध किया गाय था। पूजारी स्वामीने सुंदर वस्त्र पहनाकर सभी को अलौकिक दर्शन कराये थे।

दोपहर १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी भगावन के प्रागट्योत्सव की आरती की गयी थी।

प्रसादी के सभा मंडप में सरकारश्री के मार्गदर्शिकानुसार संतो ने भजन-कीर्तन किया था।

रात्रि को १० बजे सर्वोपरी बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के प्रागट्योत्सव की आरती धुमधाम से की गई।

प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महारजाश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने अंतःकरण पूर्वक परब्रह्म परमात्मा श्रीहरि से प्रार्थना किये । कि इस कोरोना से सभी जीवो की रक्षा करें। पुरा देश कोरोना मुक्त हो।(चंपकभाई - कोठार ओफिस)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धाम के १९५ वे वार्षिक पाटोत्सव

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के करकमल द्वारा स्थापित महाप्रतापी देव श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का १९५ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. श्री शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और स.गु. शा. पी.पी. स्वामी के शुभ मार्गदर्शन अनुसार ता. ४-४-२०२१ फाल्गुन वद-८ रविवार के दिन शास्त्रोक्त विधि से पूर्ण किया गया।

ता. ३-४-२०२१ के दिन प्रातः ९ बजे विद्वान भूदेवो द्वारा विष्णुयाग का प्रारंभ किया गया । और तारीख ४-४-२०२१ प्रातः १०-३० पर यज्ञ की पूर्णाहुति प.पू. महाराजश्री के कर कमलो द्वारा की गई थी।

पाटोत्सव के दिन फाल्गुन वद-८ को प्रातः ५-३० से ७ बजे तक ठाकुरजी की पूजा-अर्चना और ७ से ७-३० तक महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज तथा श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक विधिवत किया गया। प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की सुंदर धून संतो-हरिभक्तो द्वारा सोशियल डिस्टेन्सिग रखकर की गई थी । ११ बजे ठाकुरजी के सामने छप्पन भोग अन्नकूट रचना की गई थी। पाटोत्सव के यजमान प.भ. भाईचंदभाई चतुरभाई पटेल, प.भ. श्री राजेन्द्रभाई भाईचंदभाई पटेल तथा पूर्ण परिवार, मरतोली वाले (वर्तमान वडोदरा) ने अलौकिक लाभ लिये थे।(महंत के.पी. स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटोलडिया का १४ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सद्. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से घाटलोडिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिरामजान ठाकुरजी के १४ वे पाटोत्सव का ता. २३-३-२१ के दिन अच्छे रुप से मनाया गया।

प.भ. धर्मेशभाई कानजीभाई पटेल यजमान परिवार द्वारा ठाकुरजी का अभिषेकि किया गाय । ठाकुरजी को विविध प्रकार के भोजन का अन्नकूट रखा गया था । प्रासंगिक सभा में महंतश्री पी.पी. स्वामी और देव स्वामी कथा वार्ता किये थे । तथा आने वाले श्री नरनिारायणदेव के २०० वें पाटोत्सव की रुपरेखा समझाये थे । जिसमें सभी से भाग लेने का आग्रह किया गया था ।(कोठारीश्री घाटलोडिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप का ३६ वाँ (आईयोका) और २२ वाँ (बहनोका) पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप भाईयो के मंदिर का ३६ वाँ और बहनो के मंदिर का २२ वाँ पाटोत्सव विधिवत मनाया गया।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. पटेल बलदेवभाई शंकरभाई आदि परिवारने ठाकुरजी का अभिषेक का लाभ लिये । अन्नकूट के यजमान प.भ. पटेल दशरथभाई कानजीभाई (गवाडा) परिवार था।

प्रसंगोचित सभा में गांधीनगर मंदिर के महंतश्री पी.पी. स्वामी श्री नरनारायणदेव के आगामी २०० वे पाटोत्सव पर्व की रुप रेखा समझाये थे । उसमें सभी भक्तो को सेवा में जुडने के लिये अनुरोध किये थे । अन्य संतो में महंत स्वामी दिव्यप्रकाशदाजी (नारणघाट) और पूजारी देव स्वामी (गाँधीनगर) से संत आये हुए थे ।(पटेल रमेशभाई भक्तिभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झूंडाल में फूलदोलोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसादजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर झूंडाल में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा फाल्गुन सुद-१५ होली के मुख्य पर्व के अवसर पर श्री नरनारायणदेव के २०० वें पाटोत्सव पर्व के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव जयंती फुल दोलोत्सव का ठाकुरजी के समक्ष किये थे।

कालुपुर मंदिर में श्रीहरि संत-हरिभक्तो के साथ फूलदोत्सव रंग के साथ खेला गया था। तथा उसी समान रंगपूरणी प्रस्तुत की गयी थी। पूरे गाँव के हरिभक्त भाग लेकर उत्साहपूर्वक यह मनाये थे । (हितेष पटेल - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - झूंडाल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा का ९० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (नारणपुरा) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा का ९० वाँ वार्षिक पाटोत्सव कोरोना महामारी के कारण साधारण रुप में मनाया गया। टीनाभाई महाराजने प्रातः ठाकुरजी के सामने महापूजा विधिवत रुप से पूर्ण किये। जिसके मुख्य मेहमान चौधरी मोहनभाई दलसंकभाई परिवार था । इसके बाद अ.नि. लक्ष्मणभाई जीवाभाई

चौधरी ध्वजा की पूजा करके धन्य हुए । नारणपुरा मंदिर से महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी संत मंडल के साथ आये थे । तथा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती किये थे । प्रातः शाकुरजी का अभिषेक माणसा मंदिर के महंत स्वामीने किया था । चौधरी मंजुलाबेन मणाभाई कालाभाई की तरफ से सभी को महाप्रसाद खिलाया गया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बालवा ने प्रेरणादायक सेवा प्रदान किये थे । (कोठारीश्री - बालवा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी (ब्लैक टाउन) का १६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी (ब्लैक टाउन) का १६ वाँ पाटोत्सव ता. २ अप्रैल से ४ अप्रैल के मध्य उत्साह पूर्वक मनाया गया ।

प्रथम दिन कथा के अवसर पर पोथीयात्रा आयोजित की गई थी । स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी चिन्ह चिंतामणी की त्रिदिवसीय कथा का रसपान कराये था । कोविड-१९ के कारण अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री और संत लोग गये नही थे ।

लेकिन आनलाईन द्वारा ये लोग हरि भक्तो के साथ जुडकर आशीर्वाद दिये थे । पहले दिन अपनी छोटी बच्चियोने सुंदर नंद संतो का कीर्तन और नृत्य प्रस्तुत की थी । दूसरे दिन प्रातः विष्णुयज्ञ ओर शाम को बालको द्वारा अथ विश्वास के उपर नाटक का मंचन किया गया था । तीसरे दिन श्रीहरिकृष्ण महाराज को षोडशोपचार अभिषेक-अन्नकूट किया गया था । सायं सभी हरिभक्तोने ठाकुरजी का राजोपचार किये थे । इस अवसर पर अपने प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्रीने सिडनी के सभी हरिभक्तो को मंगलमंय कामना के साथ आशीर्वाद प्रदान किये थे । कोविड-१९ के कारण काफी समय के बाद इतना बड़ा उत्सव मनाया गया था । सभी हरिभक्तोने तन, मन, धन से सहयोग किया था ।

सभी ने श्रीजी महाराज से प्रार्थना किये कि समस्त विश्व कोरोना से मुक्त बने । और महाराज सभी की रक्षा करें । इसी प्रकार की उत्सव का आयोजन होता रहे । ऐसी प्रार्थना किये थे ।(प्रितेश केशव - सिडनी)

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
G S HIGH WAY BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000G523
MICR CODE : 380 019 038

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 201310100027259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

तिथी	रसोई देनेवाले	गाँव
फाल्गुन सुद-१	पटेल शिवेन मौलिक (मगस)	साबरमती
फाल्गुन सुद-१	पटेल शनि डेनी (मोहनथाल)	कुडासण
फाल्गुन सुद-१	अ.नि. पटेल गोविंदभाई परसोतमभाई (मगस)	नगासर
फाल्गुन सुद-१	पाटोत्सवकी रसोई	
फाल्गुन सुद-१	पटेल व्योम ब्रिजेश (खीर पुरी)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-१	डॉ. अशोकभी वी. मोदी (मोहनथाल)	बापुनगर
फाल्गुन सुद-२	पटेल लालजीभाई गणेशभाई (चूरमा के लड्डूं)	भाडापुरा
फाल्गुन सुद-२	पाटोत्सव की रसोई	
फाल्गुन सुद-२	अ.नि. सुखडिया परसोतमभाई कुरजीभाई (बूंदी)	निकोल
फाल्गुन सुद-३	अ.नि. पटेल मौलिककुमार जयप्रकाश भोदीलाद (काजू-बदाम मैसुब)	रिद्रोल
फाल्गुन सुद-३	पटेल देवांश और हिमाली कल्पेशभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-३	अ.नि. शांताबेन राघवभाई (चूरमा के लड्डूं)	आसोदढ
फाल्गुन सुद-३	वेकरिया गोपालभाई कानजीभाई (मोहनथाल)	सुखपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-३	वरसाणी लालजी देवसी (मगस के लड्डू)	सुखपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-३	वेकरीया रामजी देवजी (मोहनथाल)	नारायणपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-४	गं.स्व. ताराबेन हिरालाल पटेल (बूंदी के लड्डू)	सांपड
फाल्गुन सुद-४	अ.नि. वेलजी गोविंद वाघजीयाणी (बूंदी के लड्डू)	नारायणपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-४	अ.नि. राधाबेन वेलजी वाघजीयाणी (बूंदी के लड्डू)	नारायणपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-५	पटेल सुमिलभाई भीखाभाई (मगस)	वडु
फाल्गुन सुद-५	वाघजीयाणी हीरजी वेलजी	
फाल्गुन सुद-५	अ.नि. प्रेमिलाबेन हिरजी (मगस)	नारायणपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-५	अ.नि. मंजुलाबेन रवजीभाई मूलजीभाई शियाणी (खीर पुरी)	भुज-कच्छ
फाल्गुन सुद-५	भावसार शैलेषभाई (काजू बादाम मैसुब)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-६	अ.नि. केराई रतनबाई गोविंदभाई (मोहनथाल)	नारायणपर-कच्छ
फाल्गुन सुद-७	स्वामी विश्वविहारीदासजी (मोहनथाल)	वडताल
फाल्गुन सुद-७	अ.नि. पूजारी चंपकभाई नरसिंहभाई (मोहनथाल)	धोलका
फाल्गुन सुद-७	अ.नि. महेन्द्रभाई दुर्गाशंकर शुकल (चूरमा के लड्डूं)	गोता
फाल्गुन सुद-७	पटेल रंजनबेन चिमनभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-७	अ.नि. पटेल अंबालाल शिवाभाई (मोहनथाल)	कोटा
फाल्गुन सुद-७	परीख मयूरभाई आर. (बूंदी के लड्डू)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-७	पटेल गोविंदभाई देवजीभाई (खीर पुरी)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-८	पटेल कांताबेन विनोदभाई (मगस)	
फाल्गुन सुद-९	सोनी उर्मिलाबेन प्रवीणकुमार (काबू बादाम मैसुब)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-९	अ.नि. पटेल हीराबेन करशनभाई (मगस के लड्डू)	मारुसणा
फाल्गुन सुद-१२/१३	पटेल ध्रुवकुमार चिनुभाई (मगस के लड्डू)	विहारवाला
फाल्गुन सुद-१२/१३	पटेल भगवानभाई नागरदास (खीर पूरी)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-१२/१३	प्रजापति शंकरभाई देवाभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
फाल्गुन सुद-१४	अ.नि. सविताबेन कालीदास पटेल (मगस)	महादेवनगर
फाल्गुन सुद-१४	पटेल चंद्रिकाबेन वसंतलाल (काजु बादाम मैसुब)	ऊँझा
फाल्गुन सुद-१४	पटेल अर्पित रमेशभाई (खीर मालपूवा)	झुंडाल

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

फाल्गुन सुद-१५	अ.नि. हिरजीभाई हरजीभाई पटेल (मगस)	महेसाना
फाल्गुन सुद-१५	अ.नि. छगनभाई त्रिकमभाई विराणी (मोहनथाल)	रणियाणा
फाल्गुन सुद-१५	हालाई दिव्यानी चेतनभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-२	चोकसी नीलेश घनश्यामभाई (चूरमा के लड्डूं)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-२	अ.नि. किरीटभाई लालभाी पटेल (भूंदी के लड्डू)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-३	पटेल कांतिभाई नरसिंहभाई, चंद्रिकाबेन कांतिभाई (बूंदी के लड्डू)	
फाल्गुन वद-३	हरिॐ परिवार अ.नि. भीखाभाई अंबालाल भावसार (घेवर)	
फाल्गुन वद-४	शुक्ला संजयभाई (श्रीखंड पुरी)	सुरत
फाल्गुन वद-४	अ.नि. विशराम देवजी पिंडोरिया (मोहनथाल)	सलकी-कच्छ
फाल्गुन वद-५/६	अ.नि. मनजी लालजी वरसाणी (मोहनथाल)	वेकरा-कच्छ
	अ.नि. गं.स्व. अमरबाई	
फाल्गुन वद-५/६	देसाई हिरेन परेशभाई (मोतैया के लड्डू)	निकोल
फाल्गुन वद-७	अ.नि. हीरजी वीरजी वरसाणी (मगस)	वेकरा-कच्छ
	अ.नि. अमरबेन हीरजी वरसाणी	
फाल्गुन वद-७	अ.नि. चीनुभाई चतुरभाई पटेल (चूरमा के लड्डूं)	डांगरवा
फाल्गुन वद-८	अ.नि. रणछोडभाई अंबालाल पटेल (मोहनथाल)	डांगरवा
फाल्गुन वद-८	पटेल डाह्याभाई नारणदास (चूरमा के लड्डूं)	माणसावाले
फाल्गुन वद-८	पटेल शिरीषकुमार जगजीवनदास (चूरमा के लड्डूं)	गोठिब
फाल्गुन वद-८	पटेल विनोदभाई टेक्सीवाले (मगस पुरी)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-८	सोरठिया मूलाभाई वल्लभभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-९	अ.नि. हिराणी नानजी प्रेमजी (मगस के लड्डू)	मांडवी-कच्छ
फाल्गुन वद-९	अ.नि. चंद्रिकाबेन चंद्रकांत महेता (मगस के लड्डू)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-१०	जानि जितेन्द्रभाई अरविंदभाई (मगस के लड्डू)	बाकरोल
फाल्गुन वद-१०	पटेल प्रवीणभाई मूलचंददास (मोहनथाल)	डांगरवा
फाल्गुन वद-१०	पटेल कौशिकभाई जयंतीभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-१०	अ.नि. निलेशभाई धनजी नाकराणी (मगस)	केरा-कच्छ
फाल्गुन वद-११	शैलेषभाई भावसार (फराल)(ड्रायफ्रुट हलवा)	
फाल्गुन वद-११	मारवी राकेश कांतिलाल (फराल)(ड्रायफ्रुट हलवा)	जीरागढ
फाल्गुन वद-१२	पटेल कुशल पोपटभाई (मगस के लड्डू)	साबरमती
फाल्गुन वद-१२	केशव इन्जीनियरिंग जितेन्द्रभाई पटेल (शिखंडपुरी)	अहमदाबाद
फाल्गुन वद-१२	पटेल विठ्ठलभाई कचरदास (चूरमा के लड्डूं)	मोखासण
फाल्गुन वद-१२	अ.नि. हेनीबेन कांतिलाल मारवी (मोतैया के लड्डू)	जीरागढ
फाल्गुन वद-१३	अ.नि. स.गु. गवैया स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी (मोहनथाल)	जूनागढ
	गुरु स्वामी नारायणवल्लभदासजी	
फाल्गुन वद-१४	अ.नि. परसोतमभाई मगनभाई पटेल (शीखंड पुरी)	चांदखेडा
फाल्गुन वद-३०	अ.नि. खीमजी रामजी केराई (काजू बादाम मैसुब)	कच्छ-भुज

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

अपने सिडनी आस्ट्रेलिया मंदिर के १६ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन ।

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में रामनवमी और श्रीहरि जयंती के अवसर पर अक्षरभुवन में घनश्याम महाराज का अन्नकूट दर्शन ।

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में महिला और पुरुष पुलिस कर्मियो के लिये आक्सीजन सहित १२ बेड का आईसोलेशन रूम बनाया गया ।

जेतलपुर मंदिर में बिराजमान श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव अवसर पर अभिषेक का दर्शन ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 * Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान

श्री नरनारायण भगवान का २०० वर्ष

पर्व

२७ फरवरी से ५ मार्च २०२२

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की ऑफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।

http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani